राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रज्ञा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करणः नई दिल्ली व पाली राज. 03 नवंबर 2011 - 09 नवंबर 2011, वर्ष : 8 अंक : 49,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्कः 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in

www.facebook.com/ shreeshanidham

दाती संदेश

जीव और जगत सबको बनाया है सत्य स्वरूप परमात्मा ने - दाती श्री

मित्रो, मैं कौन हूं, संसार क्या है, इन बातों की चर्चा प्रायः होती ही रहती है। इनका निर्माण किसी ने किया या ये स्वतः पैदा हो गए। इस विषय पर भी सदियों से बहस होती आ रही है। लोगों के अपने-अपने दृष्टिकोण हो सकते हैं। मैं किसी के दृष्टिकोण को झुठलाने और अपने दृष्टिकोण को सही ठहराने का हिमायती नहीं हूं। किंतु मैं किसी दबाव में अपने दिल के उद्‌गारों को रोक देने का पक्षधर भी नहीं हूं। मैंने जब से होश संभाला तब से इस विषय पर लोगों के विचार सुनता रहा और मनन करता रहा हूं। सब कुछ सुनने व समझने के बाद मुझे इस बात पर भरोसा हुआ कि जीव और जगत को सत्यस्वरूप परमात्मा ने ही बनाया है। आज आप के समक्ष मैं इसी विषय पर चर्चा करने जा रहा हूं।

हमारे मनीषियों ने एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति की घोषणा करते हुए स्पष्ट किया है कि एक ब्रह्म के अलावा किसी अन्य का अस्तित्व नहीं है। जीव को ब्रह्म का ही अंश बताया है और माया को सत्य की छाया बताया है। इस बात से यह इंगित किया गया है कि माया सत्य नहीं है, किन्तु सत्य जैसा लगती जरूर है। 'माया' शब्द का अर्थ ही यह होता है - जो है नहीं। यानी जिस प्रकार की यह दिखती है वैसी होती नहीं है, इसी को माया कहते हैं। जीव त्रिगुणमयी माया के आवरण में कैद होने की वजह से अपने अंशी के परमानंद स्वरूप के ज्ञान से वंचित हो गया है।

इसलिए वास्तव में आनंद स्वरूप होते हुए भी वह अपने को दुखी मानता है। अजर-अमर अविनाशी प्रभु का अंश होने के बावजूद जीव जन्म-मरण के भवचक्र में पिसता हुआ हमेशा दुखी रहता है। शास्त्रों में वर्णित अनेक प्रसंगों में भी यह स्पष्ट किया गया है कि सत्य ही परमात्मा है और उसका सान्निध्य प्राप्त करना श्रेष्ठ व्रत है। जैसे परमात्मा सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वगुण संपन्न, प्रेरक, रक्षक और कृपालु है, ठीक ऐसे ही गुण सत्य में भी पाए जाते हैं। सत्य जिस ज्ञान से उपलब्ध होता है, संतों ने उसे भगवान का मानवीय संस्करण माना है। इसके लिए सत्संग सबसे उपयुक्त मंच होता है।

शास्त्रों में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं। धैर्य, क्षमा, इंद्रिय दमन, चोरी न करना, शुद्धि, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध। इनमें से सत्य का पालन करने पर शेष नौ लक्षण व्यक्ति में स्वयं ही आ जाते हैं, जैसे सागर में कई नदियां स्वतः जाकर मिल जाती हैं। सत्य की उपासना करने से सबसे बड़ा लाभ यह है कि कम परिश्रम में भी अधिक सफलता, सहजता, चातुर्य तथा निश्चिंतता का भाव सत्य का आचरण करने वाले व्यक्ति में आ जाता है। सत्य के लिए सत्संग बड़ा सहारा है। सत्संग में दो बातें होनी चाहिए - सत्य का पालन और सत्य का पूजन। सत्यव्रत को पालना तथा सत्य स्वरूप परमात्मा को पूजना। सत्य के महत्व, बल, तेज और ओज को बढ़ाने के लिए उसके साथ ईश्वर को जोड़ देना चाहिए। जिस संकल्प के साथ भगवान जुड़ जाएं, फिर वह संकल्प मनुष्य के जीवन में समृद्धि और सफलता को सुनिश्चित कर देता है। सत्यस्वरूप परमात्मा सर्वशक्तिमान है, उनके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

मसकहिं करें बिरंचि प्रभु, अजहुं मसक ते हीन।
अस विचार तजि संशय, रामहिं भजहिं प्रवीन॥

रामचरित मानस के इस प्रसंग में काकभुशुंडी जी संशय ग्रस्त पक्षी राज गरुड़ को समझाते हैं कि परमात्मा मच्छर को ब्रह्मा बना सकता है और ब्रह्मा को मच्छर से भी हीन बना सकता है। प्रभु की माया बड़ी विलक्षण है। उसका अंत नहीं पाया जा सकता है। इसलिए हे पक्षी राज, हर प्रकार के संशयों को छोड़कर चतुर लोग भगवान का भजन करते हैं।

रामायण ही नहीं, गीता में भी भगवान कृष्ण ने अर्जुन को समझाया है कि हे अर्जुन! बुद्धि को भी प्रेरणा देने वाला परमात्मा हूं मैं। हर इंसान की बुद्धि की बागडोर मुझ परमात्मा के हाथ में है, किंतु आत्मा अहंकार के वशीभूत होकर शरीर में अल्पज्ञ जीवात्मा बनकर निरीह व निरुपाय बन जाती है। इस जीव आत्मा भाव में बंधकर वह अपने को कर्त्ता समझ लेती है। फलस्वरूप कर्मफलों की बेड़ियों में जकड़कर दुःखी हो जाती है। सभी महापुरुषों ने अपने-अपने शब्दों में इसी बात को समझाया है कि जो कुछ होता है, वह परमात्मा की इच्छा के अनुसार ही होता है। परमात्मा की प्रेरणा के बाहर कुछ भी नहीं हो पाता। यदि हम जीव उस परमात्मा की नैसर्गिक इच्छा को समझ लें तो फिर हमारे अंदर मैं-मैं कहने वाला कोई कर्ता भाव नहीं रहेगा। इस संसार में लोगों के अहं के टकराव से बहुत सारी अजीबो-गरीब घटनाएं घटती हुई देखने को मिलती हैं। कोई कहता है - मैंने यह किया, कोई कहता है - तूने वह किया। इसी तेरे-मेरे और कर्ता बनने के भ्रम की वजह से बहुत सारी बातें हमारे जीवन में घटित होती रहती हैं। अज्ञानी जन उनसे कभी खुश, कभी नाखुश होते देखे जाते हैं। किंतु हमें इस बात को सदैव याद रखना चाहिए कि -

अनहोनी होनी नहीं, होनी होय सो होय।
चिंता वाकी कीजिए, जब अनहोनी होय।।

अर्थात अनहोनी तो होनी ही नहीं है और जो होनी है वह होकर रहती है। इसकी चिंता क्या करनी है। चिंता तो उसकी करनी है, यदि कोई अनहोनी हो जाए। इस सृष्टि का समूचा खेल सत्य स्वरूप

शेष पेज 15 पर

व्रत-त्यौहार 05 नवंबर से 11 नवंबर 2011 तक
(कार्तिक शुक्ल दशमी से मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
05	शनि	दशमी	शतभिषा	कुंभ	भद्रा प्रारंभ आधी रात के बाद 2:41 बजे से
06	रवि	एकादशी	पू. भा.	मीन	देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्म पंचक प्रारंभ, भद्रा समाप्त अप. 3:47 बजे
07	सोम	द्वादशी	उ. भा.	मीन	तुलसी विवाह, देव प्रबोधोत्सव
08	मंगल	त्रयोदशी	रेवती	मेष	भौम प्रदोष व्रत, बैकुंठ चतुर्दशी, पंचक समाप्त आधी रात के बाद 1:09 बजे
09	बुध	चतुर्दशी	अश्विनी	मेष	बैकुंठ चतुर्दशी अरुणोदय व्यापिनी
10	गुरु	पूर्णिमा	भरणी	मेष	गुरुनानक जयंती, कार्तिक पूर्णिमा, भीष्म पंचक समाप्त, त्रिपुरोत्सव
11	शुक्र	प्रतिपदा	भरणी	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारंभ

प्रज्ञा की संपूर्ण प्रस्तुति : श्री शनिधाम शिक्षा एवं शोध संस्थान, श्री शनिधाम ट्रस्ट , असोला फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली। फोन : 26653500, 26654400, Web Site : www.shanidham.in E-mail: shaninationstimes@gmail.com

मैं अपने कॅरियर और शादी के बारे में जानना चाहता हूं। कृपया मेरी जन्मकुंडली को देखकर बताएं कि मेरा कॅरियर कैसा रहेगा और शादी कब तक होगी?

पूर्वा चौरसिया, अजमेर से।

आपका मेष लग्न और कन्या राशि हैं। इस समय आपको मंगल की दशा है जो कि 28 अप्रैल 2012 तक रहेगी। उसके बाद राहु की दशा प्रारंभ हो जाएगी। ग्रह योगायोग और जन्मकुंडली संकेत यह दे रहा है कि यह स्वेच्छिक शादी की नजर आ रही हैं। शादी के लिए उपयुक्त समय 14 सितंबर 2013 के बाद हैं। वैवाहिक जीवन में बहुत समझौते करना पड़ेगा। अपने स्वभाव पर थोड़ा सा काबू रखें। क्रोध से बचें, संयम से काम लें तो वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। जन्मकुंडली कॅरियर के दृष्टिकोण से प्रतिकूल संकेत नहीं दे रही हैं। कॅरियर आपका अच्छा रहेगा।

1. कार्य में सफलता के लिए 12 मुखी 7 दानें लाल धागे में डालकर गले में धारण करें।
2. माणिक सवा पांच रत्ती सोने में रविवार के दिन पंचामृत से पवित्र कर अभिजीत मुहूर्त्त में धारण करना आपके लिए कल्याणकारी रहेगा।
3. हर रोज नित्यक्रम से निवृत्त हो स्नानोपरांत घर में घी का दीपक जलाकर गायत्री मंत्र का जाप करें। तत्पश्चात पक्षियों को दाना डालना आपके लिए लाभकारी रहेगा।

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नामः ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

E-Mail: shanidham@gmail.com

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

क्रमागत

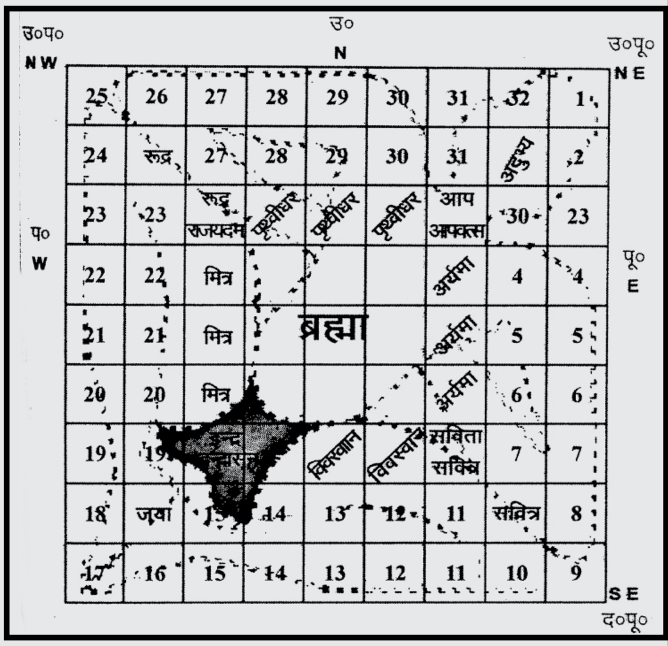

(१०) व्यंजनाकार भूखंड - पहचान - हाथ की पंखीनुमा यह भूखंड अशुभ होता है।

विवेचना - अशुभ एवं त्यागने योग्य इस भूखंड पर गृह–निर्माण करके रहने वाला व्यक्ति आर्थिक तंगी के कारण सदा परेशान रहता है।

(११) चिमटाकार भूखंड - पहचान - चिमटे के आकार का होने के कारण यह भूखंड चिमटाकार भूखंड कहलाता है।

विवेचना - यह भूखंड अशुभ एवं त्याज्य होने के कारण इस पर गृह–निर्माण नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसा भूखंड गृह–कलह का जनक होता है।

(१२) अण्डाकार भूखंड - पहचान - यह भूखंड अण्डे के आकार का होने के कारण अण्डाकार भूखंड कहलाता है।

विवेचना - अशुभ और त्याज्य होने के कारण इस भूखंड पर गृह–निर्माण कला सदा हानिकारक होता है।

(१३) विषमबाहु भूखंड - पहचान - ऐसा भूखंड जिसकी भुजाएं अलग–अलग नाप की हों, – विषम बाहु भूखंड कहलाता है।

विवेचना - अशुभ एवं त्याज्य होने के कारण ऐसे भूखंड पर गृह–निर्माण करना अशान्ति, दुःख एवं आर्थिक तंगी का जनक होता है।

(१४) अर्द्ध वृत्ताकार भूखंड - पहचान – आधे वृत्त के समान आकृति वाला भूखंड अर्द्धवृत्ताकार भूखंड कहलाता है।

विवेचना – अशुभ एवं त्याजय होने के कारण ऐसे भूखंड पर गृह–निर्माण करके उसमें रहने वाला व्यक्ति अपनी आधी–अधूरी जिन्दगी से कभी संतुष्ट नहीं रहता है।

गृह-निर्माणार्थ अन्य शुभ आकार के भूखंड

विशिष्ट गुणों एवं दृष्टिकोणों से युक्त गृह–निर्माण के लिए उपयुक्त शुभ–आकार के भूखंड निम्नलिखित हैं।

(१५) चतुष्कोणाकार भूखंड – चतुष्कोण ाकार भूखंड पर भवन–निर्माण करने से सुख की प्राप्ति होती है।

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्म-कुंडली के चौथे भाव में केतु हो और कुंडली में बृहस्पति शुभ होकर बैठा हुआ हो तो अन्य बातों के लिए केतु का प्रभाव अशुभ नहीं होता किंतु संतान के लिए इसका प्रभाव अशुभ ही पड़ता है। ऐसे जातक को संतान बहुत ही मुश्किल से प्राप्त होता है। कई बार तो जब केतु-बृहस्पति अशुभ होकर बैठे रहते हैं तब लड़का पैदा ही नहीं होता। केवल ग्रहों की शुभ स्थिति होने पर जातक के कुल पुरोहित के आशीर्वाद द्वारा ही बेटा पैदा होता है।

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्म-कुंडली के चौथे भाव में केतु हो और चद्रमा या मंगल भी उसी भाव में या तीसरे भाव में स्थित हों तो माता तथा जातक के लिए इसका फल अशुभ ही प्राप्त होता है। जिसके कारण जीवन में इन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ सकता है, फिर भी सुख कम ही प्राप्त होता है।

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्म-कुंडली के चौथे भाव में बैठा केतु मंगल या बुध से दृष्टि संबंध के

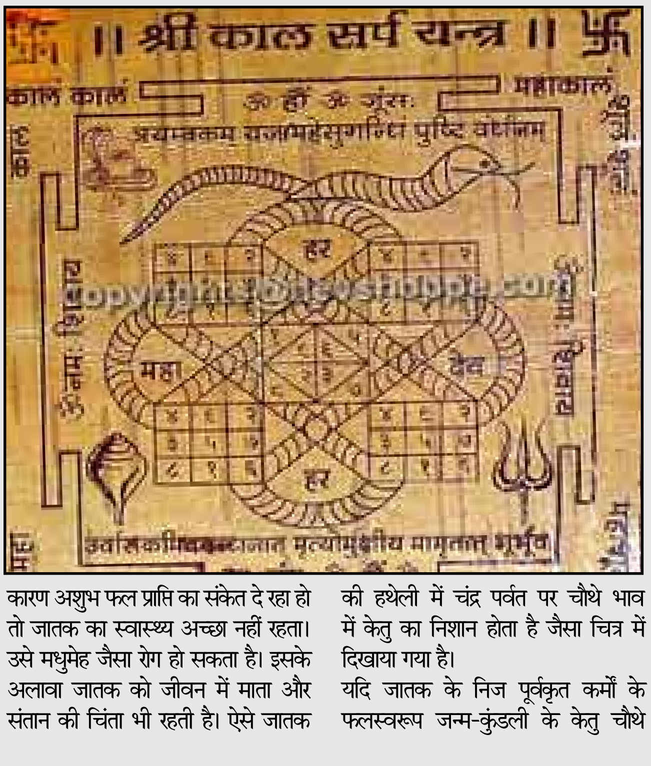

कारण अशुभ फल प्राप्ति का संकेत दे रहा हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। उसे मधुमेह जैसा रोग हो सकता है। इसके अलावा जातक को जीवन में माता और संतान की चिंता भी रहती है। ऐसे जातक की हथेली में चंद्र पर्वत पर चौथे भाव में केतु का निशान होता है जैसा चित्र में दिखाया गया है।

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप जन्म-कुंडली के केतु चौथे भाव में हो तो जातक को काफी देर बाद पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि पहली संतान पुत्र हो तो उत्तम फल मिलते हैं। यह भाव माता के लिए तथा धन के लिए कमजोर होता है। अधिक कन्याएं होने से वह धन संचयी, परिश्रमी एवं सुखी होता है। वह ईश्वर पर भरोसा करने वाला होता है।

उपाय

1. कुल पुरोहित को बृहस्पति की चीजें (केसर पीले वस्त्र, सोना) आदि दान देकर उनका आशीर्वाद लें।
2. कोई काला-सफेद कुत्ता पालें।
3. चने की दाल व केसर मन्दिर में अक्सर देते रहें।
4. शुद्ध चांदी भी धारण करें।

पांचवें भाव में केतु का फल व उपाय

हुए थे नेक जब जवानी पर चढ़ते।
मिले पोते इतने न थे जितने लड़के॥

लाल किताब के अनुसार पांचवें भाव में बैठा केतु 'गुरु का निगरानी अर्थात रक्षक' होता है। केतु पांचवें भाव में और बृहस्पति सूर्य-चन्द्र भी कुंडली में शुभ हो तो जातक के लड़के दो से अधिक हो सकते हैं। उसकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी होती है।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

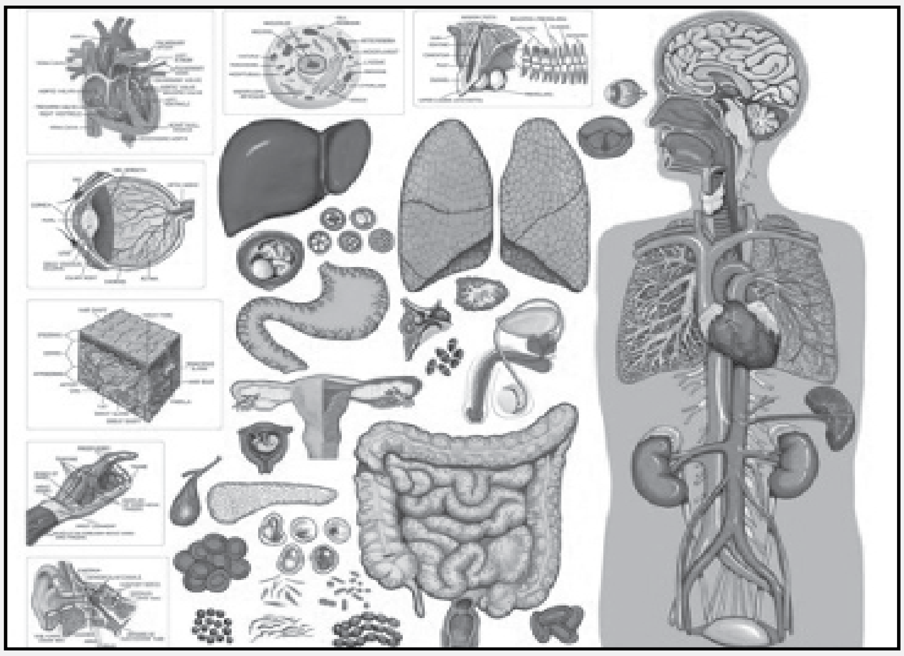

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

प्राणायाम से पुरानी खांसी और कफ दोष शमन

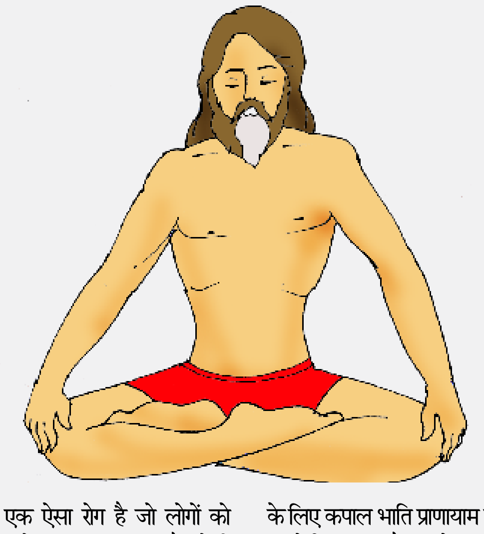

खांसी एक ऐसा रोग है जो लोगों को अक्सर परेशान करता रहता है। ऐसी सामान्य खांसी छोटे-मोटे घरेलू उपचारों से भी ठीक हो जाया करते है। किंतु जब हमारे फेफड़ों में कफ ज्यादा बढ़ जाता है तो उसे ठीक करने के लिए कई प्रकार की दवाइयों का उपयोग करना पड़ता है जिनका साइड-इफेक्ट की पीड़ा भी हमें झेलनी पड़ती है। बावजूद इसके दुबारा किसी भी समय खांसी होने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। किंतु हमारे प्राचीन मनीषियों ने कफ दोष शमन के लिए कपाल भाति प्राणायाम को बहुत उपयोगी बतलाया है। इससे कफ दोषों का निवारण बड़ी आसान से हो जाता है। यह प्राणायाम करने की शास्त्रों में दो विधियां बतायी गयी हैं और दोनों ही विधियां खांसी ठीक करने में बहुत उपयोगी हैं।

पहली विधि घेरण्ड संहिता विधि कही जाती है जिसके अनुसार सिद्धासन या सुखासन पर बैठकर नाक के बायें छेद से धीरे-धीरे श्वास खींचा जाता है और नाक के दाहिने छेद से उसे धीरे-धीरे बाहर निकाल दिया जाता है। फिर नाक के दाहिने छेद से श्वास खींचकर बायें से निकाला जाता है।

हठयोग प्रदीपिका विधि के अनुसार कपालभाति प्राणायाम करने के लिए सिद्धासन पर बैठ नाक के दोनों छेदों से श्वास छोड़ने और भरने का क्रम इतनी तीव्र गति से चलाया जाता है। जिस प्रकार लोहार की धौंकनी चलती है। इसका अभ्यास यथाशक्ति बढ़ाते रहना चाहिए।

इन दोनों विधियों का लाभ एक जैसा होता है। कोई भी विधि अपनाकर इसका लाभ उठाया जा सकता है।

सर्दी-जुकाम से सुरक्षा व उपचार हेतु प्राणायाम

सर्दी-जुकाम को चिकित्सकों ने कोई स्वतंत्र रोग नहीं बल्कि शरीर पर होने वाले किसी खतरनाक रोग के हमले की पूर्व सूचना प्रदान करने वाला एक लक्षण माना है। यह शरीर पर प्रतिकूल असर डालने वाले विषाणुओं व रोग संवाहक जीवाणुओं के हमले और शरीर में अवस्थित रोग प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करने वाले कोषाणुओं के बीच होने वाले संघर्ष की सूचना प्रदान करते हैं। जब वह हमला साधारण होता है तो सर्दी-जुकाम स्वतः ठीक हो जाता है किंतु विशेष स्थिति में इसका उपचार जरूरी हो जाता है।

क्रमशः

साप्ताहिक राशिफल

10 नवंबर से 16 नवंबर तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

10, 11 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। हर क्षेत्र में सफल होंगे। 12,13 को समय मध्यम है, सोच-विचार कर कार्य करें।कार्य आदि में रुचि कम होगी। संतान के शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था आदि में व्यस्त रहेंगे। 14,15 को समय शुभ होगा छोटी-मोटी यात्रादि करना लाभप्रद सावित होगा। 16 को समय प्रतिकूल होगा।परिवार में वैचारिक मतभेद व तनाव उत्पन्न हो सकता है।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

10, 11 को समय प्रतिकूल होगा। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेगी। स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। 12, 13 को समय शुभ होगा तथा अपनो का सहयोग प्राप्त होगा। 14, 15 को समय मध्यम होगा। व्यर्थ गपबाजी में समय का अपव्यय करेंगे। खान-पान आदि में रुचि बढ़ेगी। 16 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। छोटी-मोटी यात्रादि करना संभव होगी।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

10, 11 को समय शुभ है तथा धन लाभ होगा। नवीन वस्त्राभूषण का लाभ होगा। 12, 13 को समय प्रतिकूल होगा। जीवन साथी की उपेक्षा न करें तथा स्वास्थ्य पर ध्यान दें। 14, 15 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। स्वास्थ्य में सुधार व मन में प्रसन्नता होगी। 16 को समय मध्यम होगा। वाणी पर काबू रखें अन्यथा भाई-बन्धु व मित्रों से मनुटाव होना संभव होगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

10, 11 को ग्रह-गोचर शुभ होगा तथा उच्च अफसरजनों की सहायता से उन्नति के अवसर होंगे। 12, 13 को समय मध्यम होगा।संतान संबंधी शुभ समाचार प्राप्त होगा। 14, 15 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी तथा शत्रु हानि हेने का प्रयास करेंगे। मान-सम्मान की चिन्ता होगी। 16 को ग्रह-गोचर अनुकूल होगी तथा बिगड़े हुए कार्य को ठीक करने का अवसर प्राप्त होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

10, 11 को समय में सुधार होगा तथा उलझन व परेशानियों से राहत महसूस करेंगे। 12, 13 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। सरकारी संस्थानों में विशेष उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। 14, 15 को समय शुभ होगा संतान संबंधी समस्या का समाधान होगा। 16 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। घरेलू माहौल भी विवाद पूर्ण होगा तथा अशुभ समाचार प्राप्त होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

10, 11 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मानसिक व शारीरिक तनाव बढ़ेगा। 12, 13 को शनैः-शनैः परिस्थिति में सुधार होगा तथा किसी सभा-गोष्ठी आदि में जाने का अवसर प्राप्त होगा। 14, 15 को ग्रह-गोचर अनुकूल होगा तथा चल-अचल सम्पत्ति का लाभ होगा। 16 को समय शुभ होगा तथा नई व्यवसायिक योजना बनेगी।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

10, 11 को समय शुभ होगा तथा दाम्पत्य संबंध में मधुरता बनी रहेगी। 12, 13 को सितारों की चाल प्रतिकूल हा. ेगी। कार्य-व्यवसाय में हानि होगी। 14, 15 को शनैः-शनैः परिस्थिति अनुकूल होगी।बाधा व परेशानी से राहत महसूस करेंगे। पिता का सहयोग प्राप्त करेंगे। 16 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ फलप्रद सावित होगी तथा नवीन भूमि-वाहन आदि की प्राप्ति होना संभव होगा।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

10, 11 को समय शुभ होगा तथा पुराने ऋण-रोग आदि से छुटकारा मिलेगा। शत्रु परास्त होंगे। 12, 13 को दाम्पत्य संबंध में सुधार तथा हर्षोल्लास का माहौल होगा। 14, 15 को सितारों की चाल आपके प्रतिकूल होगी तथा बनते हुए कार्यों में भी व्यवधान उत्पन्न हो सकता है। 16 को समय मध्यम है। महत्वपूर्ण कार्य में जल्दबाजी में न करें। धन की आवश्यकता होगी परंतु मन में संतुष्टी होगी।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

10, 11 को समय मध्यम तथा अधिकारी वर्ग से न उलझें तथा स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।12, 13 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी तथा परीक्षा व प्रतियोगिता आदि में सफलता प्राप्त करेंगे। 14, 15 को समय अनुकूल होते ही रुके हुए कार्यों में सिद्धि व सफलता प्राप्त करेंगे। 16 को ग्रह-गोचर की स्थिति प्रतिकूल होगी तथा चोट-दुर्घटना या अशुभ समाचार हो सकता है।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

10, 11 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी तथा बने हुए कार्य में बाधा उत्पन्न हो सकती है। 12, 13 को समय मध्यम होगा। मन में आलस्य व कार्य आदि में रुचि न होगी तथ स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना आवश्यक होगा। 14, 15 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी तथा कानूनी झमेले व मुकदमें आदि में विजयी होंगे। 16 को समय शुभ होगा तथा नौकरी-पेशे आदि में उन्नति के अवसर होंगे।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

10, 11 को ग्रह-गोचर की स्थिति लाभप्रद सावित होगी। नये व्यवसायिक अनुबंध प्राप्त होगा माता-पिता की सेवा का लाभ होगा। 12, 13 को समय प्रतिकूल तथा सहकर्मियों का असहयोग तथा मशीनरी आदि की खरीदारी में हानि होगी। 14, 15 को समय मध्यम होगा। आय व व्यय समान तथा अध्यात्म की ओर झुकाव होगा। 16 को समय शुभ होगा। ननिहाल से शुभ समाचार तथा साहस व पराक्रम तेज होगा।

मीन (दी, दू, थ, झ, ज , दे, दो, चा, ची)

10, 11 को समय मध्यम है। आंख व गले संबंधी परेशानी हो सकती है। 12, 13 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी तथा नये आर्डर व टेंडर से लाभ होगा। 14, 15 को सितारों की चाल प्रतिकूल। मानसिक तनाव बढ़ेगा। स्थान परिवर्तन करना संभव होगा। 16 को समय मध्यम होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। छोटी-मोटी यात्रा लाभप्रद रहेगी।

सभी पापों के प्रच्छालन में समर्थ

भीष्म पंचक व्रत

हमारे जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी परिस्थियां हमारे अनुकूल रहती हैं तो कभी प्रतिकूल। इस प्रकार अनुकूलता व प्रतिकूलता के थपेड़े झेलती हुई हमारी जीवन नैया कभी धीमी तो कभी तीव्र गति से अपने लक्ष्य की तरफ अग्रसर होती रहती है। हमारा जीवन लक्ष्य चाहे जो भी हो लेकिन हर प्राणी का यह नैसर्गिक स्वभाव है कि सभी अपना जीवन सुखपूर्वक गुजारना चाहते हैं। लेकिन निजकृत कर्मों का फल भोगने के नैसर्गिक नियम के अनुसार हर प्राणी को अपने कर्मों का फल जरूर भोगना पड़ता है। जिसके कर्म शुभ रहते हैं उनके जीवन में प्रतिकूलताएं नहीं आती। किंतु प्रारब्ध का लेखा जोखा ज्ञान रहने के कारण अचानक आने वाली प्रतिकूलताओं से ये लोग घबरा उठते हैं। जब जिंदगी में प्रतिकूलताएं बार-बार आती रहती हैं तो मनुष्य की घबराहट बढ़ जाती है। ज्योतिष के द्वारा कर्मफल देने वाले ग्रहों के संबंध मे जानकारी मिलती है, जिनके पूजन से पूर्व के अशुभ कर्मों का प्रायश्चित हो जाता है। हमारे धर्म ग्रंथों में अनेक व्रतों का विधान भी बतलाया गया है जिनसे ग्रह बाधाओं का शमन व पूर्व कृत पापों का प्रायश्चित भी हो जाता है। भविष्य पुराण में भयंकर पापों के प्रायश्चित के लिए भीष्मपञ्चक व्रत का विधान बतलाया गया है। जिस प्रसंग को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

एक बार भगवान श्री कृष्ण से युधिष्ठिर ने कहा- हे यदुश्रेष्ठ कृष्ण! कार्तिक मास में श्री भीष्मपञ्चक नाम का जो श्रेष्ठ व्रत होता है, अब कृपया उसका विधान बताइये। भगवान श्री कृष्ण बोले- महाराज! मैं आपसे व्रतों में सर्वोत्तम भीष्मपञ्चक व्रत का वर्णन कर रहा हूँ। मैंने पहले इस व्रत का उपदेश भृगु जी को किया था, फिर भृगु ने शुक्राचार्य को और शुक्राचार्य ने प्रह्लाद आदि दैत्यों एवं अपने शिष्य ब्राह्मणों को बताया। जैसे तेजस्वियों में

शेष पेज 14पर

वैकुंठ चतुर्दशी व्रत

जिससे सामान्य जन भी प्रभु के धाम के अधिकारी बन जाते हैं।

यह व्रत कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को होता है। इस दिन व्रत रख कर वैकुण्ठ बिहारी की पूजा करनी चाहिये। चतुर्दशी के दिन व्रत रखने वाले पहले स्वयं स्नान करके फिर भगवान को स्नान कराकर भोग लगायें। भोग के उपरान्त आचमन लगाकर फूल, दीप, चन्दन आदि से आरती उतारकर भोग को बांट दें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करायें तथा उन्हें दक्षिणा देकर विदा करें। रात्रि में मूर्ति के सम्मूख ही सोयें। दिन भर कीर्तन करें।

चतुर्दशी के दिन व्रत रखने वाले पहले स्वयं स्नान करके फिर भगवान को स्नान कराकर भोग लगायें। भोग के उपरान्त आचमन कराकर फूल, दीप, चन्दन आदि से आरती उतारकर भोग को बांट दें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करायें तथा उन्हें दक्षिणा देकर विदा करें। रात्रि में मूर्ति के सम्मुख ही सोयें। दिन भर कीर्तन करें।

वैकुण्ठ चतुर्दशी की कथा- एक समय की बात है भगवान बैकुण्ठ में बैठे हुए थे। तभी उनके पास नारद मुनि आये। नारद जी को देखकर भगवान ने उनके आने का कारण पूछा, नारद जी बोले- आपने अपना नाम कृपानिधान रखा है, परन्तु आपके लोक में तो आपके भक्तजन ही आ पाते हैं। फिर आपकी उनके ऊपर कृपा क्या हुई? वे तो अपने जप-तप के प्रभाव से आपके धाम में आ ही जाते हैं। भगवान बोले- नारद जी, मैं आपकी बात समझ नहीं पाया।

नारद जी बोले- क्या आपने ऐसा सुलभ मार्ग बनाया है जिससे कम सेवा करने वाला भी आपकी शरण में आ सके? तब भगवान बोले- हे नारद जी! यदि आप ऐसा कहते हैं तो सुनो, कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन जो भी मनुष्य मेरी सच्चे मन से पूजा करेगा, वो स्वर्ग द्वार जो देव मंदिरों में बने हुए हैं, उनमें मेरी सवारी के साथ प्रवेश करेगा-वह वैकुण्ठ को प्राप्त होगा। तभी भगवान ने जय और विजय को बुलाकर कहा- देखो, कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को वैकुण्ठ का दरवाजा खुला रहना चाहिये। इस दिन जो व्यक्ति नाममात्र को भी मेरी पूजा करे, उसे स्वर्ग में स्थान दें। इस बात को सुनकर नारद जी कहने लगे- हे कृपानिधान! अब आप दीनानाथ कहलाने के अधिकारी हैं। यह कह कर नारद जी हरि गुण गाते वीणा बजाते चले गये।

श्री गुरु नानक देव जी

जिनकी जलाई हुई ज्ञान ज्योति से आज भी पूरे विश्व के मानव लाभान्वित हो रहे हैं

सिख गुरुओं की इस बात में कोई महत्ता नहीं है कि उन्होंने मुगलों के पाप शासन का जो मुकाबला किया वह सफलीभूत हुआ, उनकी वास्तविक महत्ता तो समस्त मानव समाज को उठाने में है। उन्होंने चारों वर्णों को एक ही व्यक्ति में इकट्ठा करके एक ऐसा नमूना बना दिया जो सृष्टिकर्ता की ऐन मुराद हो सकती है। उन्होंने एक ही सिख में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र चारों के गुणों को इकट्ठा कर दिया।

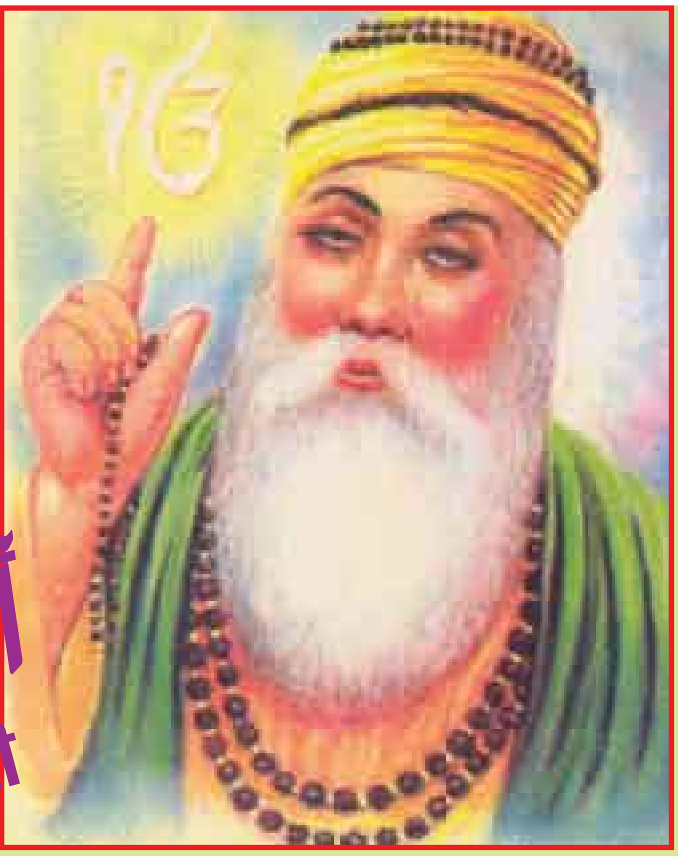

सिखों के दस गुरु हुए हैं। इन दस गुरुओं ने जो नवीन धार्मिक पन्थ चलाया उसी को सिखमत, गुरुमत अथवा खालसापन्थ कहते हैं। ये दस गुरु संसार के धार्मिक इतिहास में अद्वितीय नेता हुए हैं। सिख गुरुओं की इस बात में कोई महत्ता नहीं है कि उन्होंने मुगलों के पाप शासन का जो मुकाबला किया वह सफलीभूत हुआ, उनकी वास्तविक महत्ता तो समस्त मानव समाज को उठाने में है। उन्होंने चारों वर्णों को एक ही व्यक्ति में इकट्ठा करके एक ऐसा नमूना बना दिया जो सृष्टिकर्त्ता की ऐन मुराद हो सकती है। उन्होंने एक ही सिख में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र चारों के गुणों को इकट्ठा कर दिया। जहाँ गुरुओं का एक सिख के लिए यह आदेश था कि वह निरन्तर हरिनाम श्री वाहिगुरु का जप करे, आठों पहर दूसरों की सेवा के लिये अपने तन-मन-धन से तत्पर रहे और अपनी गृहस्थी के निर्वाह के लिए सत्य व्यवहार करे, वहाँ साथ ही उसके हाथ में तलवार देकर उसे ऐसी शक्ति से परिपूर्ण किया जिससे समय पर वह अपने धर्म की अथवा अपने देश की रक्षा भी कर सकें। सिखमत के आदिआचार्य, अज्ञान अन्धकार के विनाशक, सूर्य स्वरूप जगद्गुरु नानक का जन्म राइमोइकी तलवण्डी (जो अब नानकाणा साहिब के नाम से प्रसिद्ध है) में बेदी कालूचंद पटवारी के घर माता तृप्ता जी के उदर से संवत् 1526 को हुआ।

गुरु नानक बचपन से ही शान्त स्वभाव के थे। ये अधिकतर एकान्त में बैठना ही पसंद करते थे। माता जी की बड़ी इच्छा रहती थी कि मेरा नानक भी और बालकों की तरह बाहर जाकर खेले। एक दिन माता जी के बहुत कहने पर आप बच्चों के साथ खेलने बाहर आये तो उनसे कहने लगे कि तुम कोई नया खेल खेलना चाहते हो या वही पुराने खेल जैसे रोज खेला करते हो। सबने नया खेल खेलने को कहा, इस पर नानक जी ने सब बच्चों को पद्मासन लगवाकर एक गोल पंक्ति में चुपचाप बैठा दिया और कहा कि मन ही मन सत्यकर्त्तार सत्यकर्त्तार कहते चलो। कितनी देर इसी प्रकार बच्चे समाधि में रहे। माता बड़े चाव से देखने को आयी कि मेरा नानक कैसे खेलता है, पर वह सब बच्चों को चुपचाप देख और भी चकित हुई। पिता जी ने संवत् 1432 में नानक साहब को गोपाल पण्डित के पास हिन्दी पढ़ने के लिये बैठाया, संवत् 1435 में ब्रजलाल पण्डित के पास संस्कृत विद्या ग्रहण करने के लिये और संवत् 1439 में मौलवी कुतबुद्दीन साहिब के पास फ़ारसी पढ़ने के लिये बैठाया, परन्तु इन तीनों उस्तादों को गुरु जी ने अपने आत्मिक बल द्वारा अपना शिष्य बना लिया और समझाया कि विद्या का तत्त्व जाने बिना पढ़ा-लिखा मनुष्य भी मूर्ख है। गुरु नानक जी सदैव हरि चिन्तन में लवलीन रहते थे और किसी कार्य व्यवहार की ओर ध्यान नहीं देते थे। इनके पिता की यह तीव्र इच्छा रहती थी कि ये किसी काम में लगे। एक बार पिता ने कुछ रुपये देकर आपको बाहर भेजा कि कोई

शेष पेज 15 पर

पूर्णिमा तिथि चंद्र देव को अत्यंत प्रिय है। स्वभाव से ही शुभ ग्रह चंद्रमा इस तिथि को श्रद्धा पूर्वक स्नान कर दान पुण्य करने वालों पर विशेष प्रसन्न होते हैं। अमावस्या व पूर्णिमा तिथि को पितरों के तर्पण व देवताओं के पूजन से प्रभु की अनुकंपा बड़ी सरलता से प्राप्त हो जाती है। पूर्णिमा के दिन व्रत रहते हुए तीर्थ स्नान व दान से सभी ग्रह बाधाओं का निवारण हो जाता है तथा मनोरथों की सिद्धि में भी यह विशेष उपयोगी है।

पीड़ा परिहार व मनोरथ सिद्धि में सहायिका कार्तिक पूर्णिमा

पूर्णिमा चाहे किसी भी मास की हो वह चंद्रमा की प्रिय तिथि है क्योंकि उसी तिथि को वे सोलह कलाओं से परिपूर्ण होते हैं। इसी तिथि को चंद्रमा को तारा से बुध नामक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। इस लिए यह तिथि चंद्र देव को अत्यंत प्रिय है। स्वभाव से ही शुभ ग्रह चंद्रमा इस तिथि को श्रद्धा पूर्वक स्नान कर दान पुण्य करने वालों पर विशेष प्रसन्न होते हैं। इस अमावस्या व पूर्णिमा तिथि को पितरों के तर्पण व देवताओं के पूजन से प्रभु की अनुकंपा बड़ी सरलता से प्राप्त हो जाती है। पूर्णिमा के दिन व्रत रहते हुए तीर्थ स्नान व दान से सभी ग्रह बाधाओं का निवारण हो जाता है तथा मनोरथों की सिद्धि में भी यह विशेष उपयोगी है। हमारे धर्म ग्रंथों में कार्तिक, माघ व वैशाख की पूर्णिमा को बहुत पुण्यप्रद माना गया है। भविष्य पुराण में इस संबंध में बहुत सुंदर प्रसंग प्राप्त होता है जिसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

एक बार भगवान श्री कृष्ण से राजा युधिष्ठिर ने पूछा- भगवन! संवत्सर में कौन-कौन तिथियाँ स्नान दान आदि में अधिक पुण्यप्रद हैं। उनका आप वर्णन करें। भगवान श्री कृष्ण बोले- महाराज! वैशाख, माघ और कार्तिक- इन तीनों महीनों की पूर्णिमा स्नान-दान आदि के लिए अति श्रेष्ठ हैं। इन तिथियों में स्नान, दान आदि अवश्य करने चाहिए। इन तिथियों में तीर्थों में स्नान करें

शेष पेज 14 पर

बच्चों को नहीं रखें घर में कैद

विटामिन डी की कमी से हो सकती है हड्डियां कमजोर

बच्चों को हमेशा घर के अंदर रखने से उनकी हड्डियां कमजोर हो रही हैं? बच्चे गगनचुंबी इमारतों के एयरकंडीशन कमरे में दिनभर बंद रहते हैं। ऐसे में उसके शरीर को धूप नहीं लगती और बच्चा रिकेट्स (सूखा रोग) जैसी बीमारी का शिकार हो जाता है। कभी यह बीमारी गरीब लोगों के परिवारों में हुआ करती थी लेकिन अब यह संपन्न घरों में भी प्रवेश कर गई है।

आपने कभी सोचा है कि बच्चों को हमेशा घर के अंदर रखने से उनकी हड्डियां कमजोर हो रही हैं? बच्चे गगनचुंबी इमारतों के एयरकंडीशन कमरे में दिनभर बंद रहते हैं। ऐसे में उसके शरीर को धूप नहीं लगती और बच्चा रिकेट्स (सूखा रोग) जैसी बीमारी का शिकार हो जाता है। कभी यह बीमारी गरीब लोगों के परिवारों में हुआ करती थी लेकिन अब यह संपन्न घरों में भी प्रवेश कर गई है।

80 फीसदी बच्चों में विटामिन डी की कमी

एक अध्ययन के मुताबिक शहरी क्षेत्र के 80 फीसदी बच्चों में विटामिन डी की कमी पाई गई। वहीं 10 से 15 फीसदी बच्चे रिकेट्स के शिकार हैं। 90 फीसदी गर्भवती महिलाओं में भी विटामिन डी की कमी पाई गई। पहले साल में रिकेट्स के एक या दो मामले देखने में आते थे पर अब हर महीने ऐसे चार से पांच मामले देखने में आने लगे हैं। इनमें ज्यादातर मामले संपन्न परिवारों के होते हैं जहां भोजन और ऐशोआराम के तमाम साधन उपलब्ध हैं। ऐसे घरों में बच्चा स्कूल से लौटने के बाद दिन भर एयरकंडीशन कमरों में टीवी और कंप्यूटर से चिपका रहता है। ऐसे में उसके शरीर को धूप नहीं लगती और उसमें विटामिन डी की कमी होने लगती है। धीरे-धीरे बच्चा रिकेट्स का शिकार हो जाता है।

रिकेट्स का इलाज बहुत आसान

जिस बच्चे में रिकेट्स सक्रिय अवस्था में रहता है वह चिड़चिड़ा हो जाता है। हड्डियों में दर्द के चलते वह रोता है और उसके पैर या सीने में गंभीर विकृति होने लगती है। अगर समय पर इसका इलाज नहीं हुआ तो बच्चे की हड्डी में फ्रैक्चर होने लगता है और उसका विकास रूक जाता है। चिकित्सा जगत में रिकेट्स का इलाज बहुत आसान है। विटामिन डी की खुराक अगर कैल्शियम पूरक के साथ दस दिनों तक लिया जाए तो यह बीमारी दूर हो जाती है। लेकिन रिकेट्स के जटिल मामलों जैसे हड्डियों में विकार आने की स्थिति में इलाज आसान नहीं है। जटिल मामलों के इलाज में कई महीनें लग जाते हैं। विकलांगता या दीर्घकालिक समस्याओं से बचने के लिए कुछ बच्चों की सर्जरी भी करनी पड़ती है।

क्या है रिकेट्स

बच्चों में विटामिन डी, कैल्सियम और फॉस्फेट की कमी से यह रोग होता है। इस बीमारी में हड्डियां नरम और कमजोर हो जाती हैं। बच्चों के शारीरिक विकास के वक्तइस रोग की आशंका बनी रहती है। क्योंकि उस समय उन्हें ज्यादा मात्रा में कैल्सियम और विटामिन डी की जरूरत होती है। टीवी और कंप्यूटर से चिपका रहता है। ऐसे में उसके शरीर को धूप नहीं लगती और उसमें विटामिन डी की कमी होने लगती है।

कैसे बचें

स्कूल से लौटने के बाद बच्चों को टीवी और कंप्यूटर से चिपकने के बजाए उन्हें बाहर खेलने के लिए भेजिए। ताकि शरीर में विटामिन डी की कमी न हो। इस कमी को बच्चों कोओड़ा परिवर्तन कर भी दूर किया जा सकता है। बच्चों को भोजन में नियमित तौर पर दूध, मछली, दही को शामिल करें। एक से तीन साल के बच्चों को हर रोज दो बड़े कप दूध या दही और बड़े बच्चे को चार कप दूध की जरूरत होती है।

हकीकत

शहर के 80 फीसदी बच्चों में विटामिन डी की कमी पाई गई॥

10 से 15 फीसदी बच्चे रिकेट्स के शिकार हैं।

90 फीसदी गर्भवती महिलाओं में भी विटामिन डी की कमी होती है।

पेज 12 का शेष

भीष्म पंचक ....

अग्नि, शीघ्रगामियों में पवन, पूजनीयों में ब्राह्मण एवं दानों में सुवर्ण दान श्रेष्ठ है, वैसे ही व्रतों में भीष्मपञ्चक व्रत श्रेष्ठ है। लोकों में भूलोक, तीर्थों में गङ्गा, यज्ञों में अश्वमेध, शास्त्रों में वेद तथा देवताओं में अच्युत का जैसा स्थान है, ठीक उसी प्रकार से व्रतों में भीष्मपञ्चक सर्वोत्तम है। जो इस दुष्कर भीष्मपञ्चक व्रत का अनुष्ठान कर लेता है, उसके द्वारा सभी धर्म संपादित हो जाते हैं। पहले सतयुग में वशिष्ठ, भृगु, गर्ग आदि मुनियों ने, फिर त्रेता में नाभाग, अम्बरीष आदि राजाओं ने और द्वापर में सीरभद्र आदि वैश्यों ने तथा कलियुग में उत्तम आचरण वाले शूद्रों ने भी इस व्रत का अनुष्ठान किया।

ब्राह्मणों ने ब्रह्मचर्य पालन, जप तथा हवन कर्म के द्वारा और क्षत्रियों एवं वैश्यों ने सत्य शौच आदि के पालन पूर्वक इस व्रत का अनुष्ठान किया है। सत्यहीन मूढ़ मनुष्यों के लिये इस व्रत का अनुष्ठान असम्भव है। यह भीष्मपञ्चक व्रत पाँच दिन तक होता है। इस भीष्मपञ्चक व्रत में असत्यभाषण, शिकार खेलने आदि अनुचित कर्मों का त्याग करना चाहिए। पाँच दिन तक विष्णु भगवान का पूजन करते हुए शाकमात्र का ही आहार करना चाहिए। पति की आज्ञा से स्त्री भी सुख प्राप्ति हेतु इस व्रत का आचरण कर सकती है। विधवा नारी भी पुत्र-पौत्रों की समृद्धि अथवा मोक्षार्थ इस व्रत को कर सकती है। इसमें कार्तिक मास पर्यन्त नित्य प्रातः स्नान, दान, मध्याह्न स्नान और भगवान विष्णु के पूजा का विधान है।

नदी, झरना, देवखात या किसी पवित्र जलाशय में शरीर में गोमय लगाकर स्नान कर जौ, चावल तथा तिलों से देवता,ऋषियों और पितरों का तर्पण करना चाहिए। भगवान विष्णु के भी मधु, दुग्ध, घी तथा चन्दमिश्रित जल से भक्तिपूर्वक स्नान कराना चाहिए। कर्पूर, पञ्च गव्य, कुंकुम (केसर), चन्दन तथा सुगन्धित पदार्थों के द्वारा भगवान गरुडध्वज विष्णु का उपलेपन करना चाहिए। उनके सामने एक दीपक पाँच दिनों तक अनवरत दिन रात प्रज्वलित रखना चाहिए। भगवान को नैवेद्य निवेदित कर ऊँ नमो वसुदेवाय का अष्टोत्तरशत-जप, तदनन्तर षडक्षर मन्त्र से हवन करना चाहिए तथा विधिपूर्वक सांयकालीन संध्या करनी चाहिए। जमीन पर सोना चाहिए। ये सभी कार्य पाँच दिनों तक किये जाने चाहिए। इस व्रत में पहले दिन भगवान विष्णु के चरणों की कमल पुष्पों के द्वारा पूजा करनी चाहिए। दूसरे दिन बिल्व पत्र के द्वारा उनके घुटनों की, तीसरे दिन नाभि स्थल पर केवड़े के पुष्प द्वारा पूजा करनी चाहिए। चौथे दिन बिल्व एवं जपा पुष्पों से भगवान के स्कन्ध प्रदेश की पूजा करनी चाहिए और पाँचवे दिन मालती पुष्पों से भगवान के शिरोभाग की पूजा करनी चाहिए।

इस प्रकार हृषीकेश का पूजन करते हुए व्रती को एकादशी के दिन व्रत कर अभिमन्त्रित गोमय तथा द्वादशी को गोमूत्र का प्राशन करना चाहिए। त्रयोदशी को दूध तथा चतुर्दशी को दधि का प्राशन करना चाहिए। कायशुद्धि के लिए चारों दिन इनका प्राशन करना चाहिए। पाँचवे दिन स्नान कर केशव की विधिवत पूजा करना चाहिए। तत्पश्चात ब्राह्मण को भक्तिपूर्वक भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए। इसी प्रकार पुराण वाचकों को भी वस्त्राभूषण प्रदान करना चाहिए। रात्रि में पहले पञ्चगव्य पान करके पीछे अन्न भोजन करे। इस प्रकार से भीष्मपञ्चक व्रत का समापन करना चाहिए। यह भीष्मपञ्चक व्रत परम पवित्र और सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है। इसी भीष्मपञ्चक व्रत का वर्णन शरशय्या पर पड़े हुए महात्मा भीष्म ने स्वयं किया था। इसे मैंने आपको बता दिया। जो मानव भक्तिपूर्वक इस व्रत का पालन करता है, उसे भगवान अच्युत मुक्ति प्रदान करते हैं। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी जो कोई भी इस व्रत को करते हैं, उन्हें वैष्णव स्थान प्राप्त होता है। कार्तिक शुक्ल एकादशी से व्रत प्रारम्भ करके पौर्णमासी को व्रत पूर्ण करना चाहिये। जो इस व्रत को सम्पन्न करता है, वह ब्रह्महत्या, गोहत्या आदि बड़े-बड़े पापों से भी मुक्त हो जाता है और शुद्ध सद्गति को प्राप्त होता है। ऐसा भीष्म का वचन है।

पेज 13 का शेष

कार्तिक पूर्णिमा......

और यथाशक्ति दान दें। वैशाखी को उज्जयिनी (शिप्रा) में, कार्तिकी को पुष्कर में और माघी को वाराणसी (गङ्गा) में स्नान करना चाहिये। इस दिन जो पितरों का तर्पण करता है, वह अनन्त फल पाता है और पितरों का उद्धार करता है। वैशाख पूर्णिमा को अन्न, सुवर्ण और वस्त्र सहित जल पूर्ण कलश ब्राह्मण को दान करने से व्रती सर्वथा शोकमुक्त हो जाता है। इस व्रत में सुन्दर मधुर भोजन से परिपूर्ण पात्र, गौ, भूमि, सुवर्ण तथा वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माघ पूर्णिमा को देवता और पितरों का तर्पण कर सुवर्ण सहित तिलपात्र, कम्बल, रुई के वस्त्र, कपास, रत्न आदि ब्राह्मणों को दे। कार्तिक पूर्णिमा को वृषोत्सर्ग करे। भगवान विष्णु का नीराजन करे। हाथी, घोड़े, रथ और घृत-धेनु आदि दस धेनुओं का दान करे और केला, खजूर, नारियल, अनार, संतरा, ककड़ी, बैगन, करेला, कुंदुरु, कूष्माण्ड आदि फलों का दान करे। इन पुण्य तिथियों में जो स्नान, दान आदि नहीं करते, वे जन्मान्तर में रोगी और दरिद्री होते हैं। ब्राह्मणों को दान देने का तो फल है ही, परंतु बहन, भानजे, बुआ आदि को तथा दरिद्र बन्धुओं को भी दान देने से बड़ा पुण्य होता है। मित्र, कुलीन व्यक्ति, विपत्ति से पीड़ित व्यक्ति, दरिद्री और आशा से आये अतिथि को दान देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। सीता और लक्ष्मण सहित श्री रामचन्द्र जब वन चले गये थे, उस समय भरत जी अपने ननिहाल में थे। इधर लोगों ने माता कौसल्या को उनके विषय में सशंकित कर दिया कि श्री राम के वनगमन में भरत ही मुख्य हेतु है। फिर जब वे ननिहाल से वापस आये और उन्हें सारी बातें ज्ञात हुई तो उन्होंने माता को अनेक प्रकार से समझाया और शपथ भी ली, पर माता को विश्वास न हुआ, किंतु जब भरत ने कहा कि, 'माँ' ! भगवान श्री राम के वन गमन में यदि मेरी सम्मति रही हो तो देवताओं द्वारा पूजित तथा अनेक पुण्यों को प्रदाना करने वाली वैशाख, कार्तिक तथा माघ की पूर्णिमाएँ मेरे बिना स्नान-दान के ही व्यतीत हों और मुझे निम्न गति प्राप्त हो। इस महान शपथ को सुनते ही माता को विश्वास हो गया और उन्होंने भरत को अपने अङ्क में ले लिया तथा अनेक प्रकार से आश्वस्त किया। महाराज ! इन तीनों तिथियों का सम्पूर्ण माहात्म्य कौन वर्णन कर सकता है। मैंने संक्षेप में कहा है। इन तीनों तिथियों को जल, अन्न, वस्त्र, स्वर्णपात्र, छत्र आदि दान करने वाले पुरुष इन्द्रलोक को प्राप्त करते हैं।

पेज 9 का शेष

जीव और जगत ...

परमात्मा की आज्ञा के अनुसार ही जारी रहता है। सत्य स्वरूप प्रभु की आज्ञा से जारी इस माया के खेल को स्पष्ट करने वाला एक बहुत ही सुंदर प्रसंग है रामचरित मानस में। जब प्रभु राम के वन जाने का समय आ गया तब उन्होंने वन जाने का बहाना ढूंढकर देवताओं की बुद्धि को प्रेरणा दी।

भगवान राम से प्रेरित होकर इन देवताओं ने सरस्वती द्वारा मंथरा, जो कैकई की दासी थी, उसकी बुद्धि को भ्रष्ट करा दिया। बुद्धि भ्रष्ट होने से मंथरा ने कैकई को बहका दिया और राम को वनवास भेजने के लिए वर मांगने के लिए उकसाया। सभी जानते हैं कि कैकयी का राम पर कौशल्या से भी अधिक स्नेह था। कहते हैं कि कैकई पूर्व जन्म में राम की प्यारी आत्मा थी। उसने राम के वन जाने की इच्छा को पूरा करने के लिए उन्हें वनवास देने के लिए षडयंत्र रचने का पाप अपने सिर पर ले लिया और राम को राज्य के बदले बनवास भेजवा दिया।

याद रहे, प्रभु राम की इच्छा थी। तभी उनका वनवास हुआ। सारी योजना उनकी इच्छा की पूर्ति के लिए बनी थीं। इतना ही नहीं, जब राम वन चले गये तब उनको लौटाने के लिए भरत वन में जाने लगे। उस समय देवताओं के अंदर खलबली पैदा हो गई। उन्होंने पहले की तरह सरस्वती से भरत की मति फेरने के लिए आग्रह किया। किंतु देव गुरु बृहस्पति ने देवताओं को राम की इच्छा में बाधक बनने की कोशिश न करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि भगवान के भक्त की मति फेरने की चेष्टा के बदले तुम सब लोग राम से प्रार्थना करो। भगवान जो चाहेंगे वही होगा।

संभव है भगवान खुद भरत को किसी अन्य प्रकार से लौटने के लिए राजी कर लें और ऐसा ही हुआ। भगवान राम से मिलने के बाद भरत उनकी चरण पादुका लेकर अयोध्या लौट आये। वास्तव में भरत जी भगवान राम की इच्छा को समझ गये कि वे वनवास के बहाने अपने भक्तों के कष्ट दूर करना चाहते हैं। वास्तव में प्रभु की इच्छा की पूर्ति में सहयोगी बनना ही प्रभु की भक्ति का रहस्य है। परमात्मा ने इस सृष्टि का विस्तार अपनी इच्छा से किया है, किसी के कहने से नहीं। उसने इस सृष्टि को इस लिए नहीं बनाया है कि कोई देखकर खुश हो या दुखी हो। उसने तो लीला के रूप में अथवा यों कहें शिशुवत क्रीड़ा करते हुए सृष्टि रूपी खेल का विस्तार किया है। कहा भी है –

अपनी माइआ आपि पसारी, आपहि देखन हारा।

नाना रुपु धरे बहुरंगी, सभ ते रहे निआरा।।

अर्थात अपनी माया को प्रभु ने अपने आप फैलाया है। अपनी फैलायी लीला को प्रभु खुद देखने वाले हैं। प्रभु ने नाना रूप धारण कर बहुरूपिये बन गये हैं। वे सब में समाये हुए हैं और सबसे अलग भी। जिस प्रकार कोई हलवाई अपने कौशल से मिठाई तैयार करता है और खुद ही उसका स्वाद चखते हुए प्रसन्न होता है। याद रहे, हलवाई नाना प्रकार की मिठाइयां तैयार करता है, वह खुद मिठाइयां नहीं होता। जब इच्छा होती है वह मिठाइयों का स्वाद भी लेता है। किंतु वह स्वाद में बंधा हुआ नहीं है। उसमें क्षमता है मिठाई तैयार करने की, उसका स्वाद लेने की अथवा उसे बेच देने की। ऐसा करते हुए वह मिठाइयों को तैयार करने, चखने या बेचने की प्रक्रिया का अंग होते हुए भी उन सबसे न्यारा भी है।

उसी हलवाई की भांति मिठाई रूपी दुनिया को बनाने वाले परमात्मा ने अपनी माया में जीवों को बांधा हुआ है। सभी संत महात्मा यह समझाते रहते हैं कि इस रचना में जीव को जो–जो भ्रम पैदा होते हैं, उन सबको तजकर उस मालिक की शरण में मन को जोड़ना चाहिए। प्रभु में बिना मन को जोड़े हमारी बुद्धि सदैव उधेड़बुन में पड़ी रहेगी। हमारे प्राचीन मनीषियों ने प्रभु को पाने के लिए बड़ा ही सुन्दर तरीका बतलाया है। वह यह कि उस असीम को अपनी बुद्धि की सीमा में कैद नहीं कर सकते लेकिन अपनी सीमित बुद्धि को त्याग कर उस असीम में समर्पित हो अपने आपको भी असीम जरूर बना सकते हैं। बूंद में समुद्र नहीं समा सकता किन्तु समुद्र में बूंद समर्पित होकर समुद्र अवश्य बन सकता है। इसलिए हर प्रकार का भ्रम तजकर उस मालिक की शरण में ही चित्त को जोड़े रखना चाहिए।

सभी संत महात्मा समय–समय पर लोगों को यह स्पष्ट संदेश देते रहे हैं कि उस सत्यस्वरूप परमात्मा की गति को कोई नहीं जान सकता। योगी जो योग में युक्त हैं, उस सत्यस्वरूप परमात्मा में मिलने का यत्न करते हैं लेकिन सफल नहीं हो पाते। इंद्रियों को जीतने वाले यति और तपस्या करते हुए शरीर को अनेक प्रकार से कष्ट देने वाले तपस्वी भी उस सत्यस्वरूप परमात्मा का दर्शन नहीं कर पाते। कुछ बुद्धिजीवी लोग भी हैं जो अपनी बुद्धि की दौड़ से उस सत्यस्वरूप परमात्मा को पकड़ना चाहते हैं, लेकिन वे भी अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाते। उस सत्यस्वरूप प्रभु की लीला बड़ी न्यारी हैं। एक पल में राजा को रंक और रंक को राजा बनाना उनकी इच्छा पर निर्भर है। कुछ पहुंचे हुए महापुरुषों ने सत्यस्वरूप परमात्मा के इस खेल को शिशुवत क्रीड़ा बताया है। जिस प्रकार कोई बच्चा एक पल में मिट्टी का घर बनाता है और दूसरे ही पल में उसे बिगाड़ कर दूसरा घर बनाता है। उसे घर बनाने या बिगाड़ने में जरा भी देर नहीं लगती है। उसे घर बनाने और बिगाड़ने में एक ही प्रकार का आनंद आता है। उसी प्रकार परमात्मा भी चराचर जगत का सृजन–पालन व संहार करता है। यह सृजन–पालन व संहार का कार्य उसका खेल है। इसका परमात्मा को कोई पुण्य–पाप नहीं लगता। प्रभु अपनी माया के बंधन में नहीं बंधता है। माया का प्रभाव तो अन्य जीवों पर पड़ता है। प्रभु के संकल्प मात्र से कोई जीव क्षणभर में राजा और क्षणभर में कंगाल बन जाता है। यह सब सत्यस्वरूप परमात्मा का खेल है। उसी ने चराचर जगत को अपनी मौजमस्ती में बनाया है और जबतक उसकी चाहत रहती तबतक इसे बरकरार रखता है।

पेज 13 का शेष

नानक जयंती...

बढ़िया सौदा खरीदकर लावे। रास्ते में कई दिन के भूखे विद्वान संत मिले तो आपने सारे रुपये उनके खाने-पीने का सामान खरीदने में अर्पण कर दिया। घर लौटकर पिता को सब हाल सुनाया और कहा कि जो सौदा आज मैंने खरीदा है उससे अधिक खरा और सच्चा सौदा और कोई नहीं खरीदा जा सकता। इस बात पर पिता बड़े क्रुद्ध हुए और उनको मारा भी। इससे इनकी बहिन श्री नानकी जी को बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि यह अपने भाई को साक्षात ईश्वर समान जानती थी। इसलिये संवत् 1541 में नानकी जी अपने पति जयराम जी से कहकर गुरु नानक देव जी को भी सुलतानपुर अपने घर अपने साथ ही ले आयीं। यहाँ सब लोगों के कहने पर संवत् 1542 में गुरु जी ने दौलतखाँ लोदी के मोदी खाने की सेवा सँभाल ली।

संवत् 1544 में आपका विवाह मूलचन्द जी की सुपुत्री श्री सुलक्षणी देवी के साथ हुआ, जिससे आप के दो पुत्र बाबा श्री चन्द और बाबा लक्ष्मीदास उत्पन्न हुए।

यद्यपि सेवा गुरु जी मोदीखाने में करते थे, परन्तु मन उनका ईश्वर की ओर ही रहता था। कितना सामान आप कई दफ़ा मुफ्त बाँट दिया करते थे, परन्तु हिसाब किताब सब ठीक होता था और कोई सामान जाँच करने पर कभी भी घटा हुआ नहीं निकलता था। एक दिन संवत् 1554 में आटा तौलते समय एक, दो, तीन गिनते हुए जब तेरह पर पहुँचे तो गिनती बिनती सब भूल गये और तेरा-तेरा कहते ही सारा आटा तौल डाला। आज से आपने मोदीखाने का कार्य छोड़ दिया। यदि कोई कुछ पूछता था तो उसे यही उत्तर देते थे कि न काई हिन्दू, न मुसलमान। यह शब्द गुरु साहब के मुख से कुछ ऐसे वेग से कहे जाते थे कि लोग चकित रह जाते थे। बात यह थी कि नानक अब केवल नानक ही न थे, वह नानक से अब गुरु नानक हो गये थे। बस झट से अपने चित्त से विचार कर आपने निश्चय कर लिया कि अपने अन्तःप्रकाश से जगत् के अन्धकार का विनाश करना आवश्यक है। यह भी सोच लिया कि घर बैठ कर उपदेश करने से संसार का पूर्ण उपकार नहीं हो सकता। इसलिये द्वेष, ईर्ष्या, वैर, विरोध आदि की प्रचण्ड आग से जलती हुई सृष्टि को ईश्वर के अमृत नाम की वर्षा द्वारा शान्ति प्रदान करने के लिये आपने संवत् 1554 में देशाटन आरम्भ कर दिया।

राजयोगी श्री गुरु नानदेव जी की चार यात्राएँ प्रसिद्ध हैं। प्रथम यात्रा में गुरु जी पहले एमनाबाद गये और वहाँ के एक बढ़ई भाई लाले के घर रहकर छूत-छात का भ्रम दूर किया। फिर हरिद्वार, देहली, काशी, गया आदि स्थानों में सच्चे धर्म का प्रचार करते हुए जगन्नाथपुरी पहुँचकर कर्त्तार की सच्ची आरती का उपदेश दिया। दूसरी यात्रा गुरु जी ने दक्षिण की ओर की और अर्बुदगिरि (कोह आबू), सेतुबन्ध रामश्वर, सिंहलद्वीप आदि स्थानों में कर्त्तार की भक्ति का प्रचार किया। तीसरी यात्रा में आपने सरमौर, गढ़वाल, हेमकूट, गोरखपुर, सिक्किम, भूटान, तिब्बत आदि स्थानों में वाहिगुरु परमात्मा की अनन्य उपासना दृढ़ करायी। चोथी यात्रा पश्चिम की ओर की। बलोचिस्तान होते हुए मक्के पहुँचे और एक दिशा की ओर मुख करके सर्वव्यापी कर्तार की नमाज पढ़ने का खण्डन किया। रूस, बगदाद, ईरान आदि की सैर करते हुए कंधार, काबुल आदि में सत्यनाम का सदुपदेश देते हुए हसन अबदाल निवासी वली कंधारी का अभिमान दूर किया।

गुरु नानक देव जी का उपदेश करने का ढंग विचित्र तथा नवीन था। वे इस ढंग से उपदेश करते थे जो बिजली की तरह असर करता था। मक्के पहुँचकर गुरु जी काबे की ओर पैर करके सो गये। जब क़ा ाी क्रुद्ध हुआ तो गुरु जी ने कहा- क़ा ाी जी, जिधर अल्लाह का घर न हो मेरे पैर उधर कर दीजिए। कहते हैं कि क़ाथा ने गुरु जी के पैर जिधर को फेरे क़ाबा भी उधर ही फिर गया।

स0 1579 में 25 वर्ष भ्रमण करने के बाद गुरु जी कर्त्तार पुर में (जिसे उन्होंने स0 1561 में स्वयं आबाद किया था) रहने लगे और भक्ति रस के सदावर्त के साथ-साथ अन्न का लंगर भी सब लोगों के लिये जारी किया। यहीं इसी साल गुरु जी के माता-पिता का देहान्त हुआ।

यह सिद्ध करने के लिये कि आचार्य पदवी का अधिकारी एक योग्य पुरुष ही हो सकता है, गुरुजी ने अपनी गद्दी अपने किसी पुत्र को नहीं दी, किन्तु अपने एक योग्य शिष्य श्री अंगदजी को दी और (इसके पश्चात) संवत् 1596 में परलोक गमन किया। आपकी आयु 70 वर्ष 4 महीने 3 दिन की हुई। अन्तिम संस्कार करने के लिये सिख, हिन्दू और मुसलमानों का परस्पर विवाद हुआ, क्योंकि ये सभी जगत् गुरु को अपना ही गुरु पीर मानते थे। अन्त को जब गुरु साहब का वस्त्र उठाया गया तो वहाँ गुरु जी का शरीर नहीं मिला, इसलिये आधा वस्त्र लेकर मुसलमानों ने कब्र बनायी और आधा वस्त्र हिन्दू सिखों ने लेकर संस्कार किया।

आपकी उच्चारण की हुई तथा रचित सारी वाणी पञ्चम गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी की अपार कृपा द्वारा श्री गुरु ग्रन्थ साहब संकलित है। इसके पठन से पता चलता है कि श्री गुरु नानक देव जी हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि सब संतों के केन्द्रीय स्थानों पर पहुँचे और अपने ईश्वरीय ज्ञान से उन्हें सीधे मार्ग पर डाला। जपुजी, पट्टी, आरती, दक्षिणीय ओंकार, सिद्धगोष्ठी आदि आपकी प्रसिद्ध वाणियों में से हैं।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका 200
सरल गोचर प्रवेशिका................200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका.................100
सरल वास्तु प्रवेशिका.................150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका...150
ताजिक ज्योतिष.......................150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल..........50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)....200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)...200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग....100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव..........100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या...100
शनि उपासना क्यों और कैसे?.....200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य...100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान.....100
शनिवार व्रत विधि व कथा............25
काल सर्प योग.........................100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
भोग रोग योग..........................200
चमत्कार को नमस्कार................100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 1......100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 2 200
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 3 200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 1...125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 2 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 3 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 4 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 5 ..200
ग्रह-नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार......80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार....................30
आसनों द्वारा रोगोपचार.................30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार..............25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं....30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न..............25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार....20
तन-मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति.....25
आसनःआरोग्यता का अनुपम साधन..225
प्राणायाम 150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए..100
मानुष तन दुर्लभ अति..................30
हो कौन? जाओगे कहां? जानोगे कैसे?....100
जीवन शांत मन के साथ...............35
तनाव मुक्त जीवन.......................35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा..50
लाली मेरे लाल की...................125
समाधान...............................150
एक शाश्वत खोज......................125
मर्म की बातें (I,II,III)............. 75
कुडलिनी जागरण.....................200
सफलता के सनातन सूत्र-प्रथम पुष्प....125
कार्य सफलता में बाधक तनाव 125
Living with peace of life.........35
Eternal Bliss...................150
Shedding of stress.............50
Effectuation of Shani Adoration...200
Tiny Tips 125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

गुरुदेव की युक्ति से मिलती है मुक्ति दुखों की बेड़ियों से- दाती श्री

सद्गुरु की भूमिका हमारे जीवन को सजाने-संवारने व संभालने वाली है। गुरु ऐसी युक्ति प्रदान करते हैं, ऐसा ज्ञान प्रदान करते हैं जिसके आलोक में मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मों के अनुरूप बने प्रारब्ध को भी अपने अनुरूप बड़ी आसानी से मोड़ सकता है। प्रारब्ध या भाग्य के असली नियामक तो हम ही होते हैं। किंतु सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जो भाग्य-विधाता इसलिए कहा जाता है क्योंकि ब्रह्मा ही हमारे संचित कर्मों के एक सीमित अंश को प्रारब्ध बनाते हैं जो हमें वर्तमान जीवन में ही भोगना पड़ता है। हमारे पूर्वकृत कर्मों के आधार पर ही हमारे भाग्य बनते हैं।

कहते हैं कि एक व्यक्ति बचपन से ही गुरुदेव की शरण में चला गया था। एक बार उसके घर से बुलावा आया तो गुरुदेव ने उसे घर जाने की इजाजत दे दी। जाने के पहले उसने गुरुदेव से अनुरोध किया कि मुझे कुछ ऐसी सलाह दें जिसका अनुपालन कर मेरा और मेरे भाई के परिवार का कल्याण हो। गुरुदेव ने कहा, वत्स! तुमने मेरी जिस प्रकार से सेवा की उससे मैं बहुत प्रसन्न हूं। तुम्हारे भैया-भाभी का भी इसमें सहयोग अवश्य रहा। क्योंकि उन्होंने घर पर माता-पिता की सेवा का दायित्व निर्वाह करते हुए भी तुम्हें गुरु आश्रम में इतने दिनों तक सेवा करने का मौका दिया।

अतः आज जब तुम्हारी मदद की उन्हें आवश्यकता पड़ी है तो तुम उनके पास अवश्य जाओ। जहां तक मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हारे भाई के संतान होने वाली है। तुम घर जाकर भाई की हर प्रकार से मदद करो। लेकिन प्रसव के दिन तुम एक बात का विशेष ध्यान रखना कि जब तुम्हारी भाभी बच्चा जनने के लिए प्रसूतिका गृह में चली जाये तो तुम एक पहरेदार की तरह दरवाजे के बाहर खड़े रहना और किसी भी बाहरी व्यक्ति को अंदर मत जाने देना। याद रहे, बच्चे का जन्म होते ही उसका भाग्य लिखने के लिए ब्रह्मा कोई न कोई रूप धारण कर प्रसूतिका गृह में अवश्य प्रवेश करना चाहते हैं।

किंतु तुम ब्रह्मा को अंदर मत जाने देना। केवल एक शर्त पर ब्रह्मा को प्रसूतिका गृह में प्रवेश की अनुमति देना जब वह यह वचन दें कि नवजात शिशु के भाग्य में उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसे आकर तुम्हें अवश्य बता देंगे। गुरुदेव की यह सलाह सुनकर वह व्यक्ति उन्हें प्रणाम करते हुए अपने घर चला गया। घर जाने पर उसने वैसा ही किया जैसा गुरुदेव ने बताया था। ब्रह्मा ने प्रसूतिका गृह से बाहर निकलते समय नवजात शिशु के भाग्य का विवरण देते हुए बताया कि उसकी किस्मत में आजीवन एक बोरी चावल और एक भैंस का सुख अवश्य मिलता रहेगा। न तो उसके पास इससे अधिक संपत्ति होगी और न कम। गुरुदेव के आश्रम पर लौटने के बाद उसने उक्त सारी बातें अपने गुरुदेव को बतला दी।

समय गुजरता गया और कुछ वर्षों के बाद उस व्यक्ति के भाई और भाभी परलोक सिधार गये और वह नवजात शिशु जवान हो गया और घर की सारी जिम्मेवारी का बोझ उसे ही संभालना पड़ रहा था। उसकी आर्थिक हालत बड़ी खराब हो गयी। एक बार गुरुदेव की सेवा में संलग्न उस सेवक को मालूम हुआ कि उसका भतीजा बहुत तंगहाली में गुजर-बसर कर रहा है। जब यह बात उसने गुरुदेव के समक्ष रखी तो गुरुदेव ने कहा - वत्स, अब वक्त आ गया है कि तू एक बार पुनः अपने घर वापस जाओ और जैसा मैं कहता हूं वैसा ही करने के लिए अपने भतीजे को राजी कर लो। यदि वह मेरे कहे अनुसार चलेगा तो उसका इहलोक और परलोक दोनों सुधर जायेगा।

इस प्रकार गुरुदेव ने अपने शिष्य को सारी बातें अच्छी तरह समझा दीं कि उसे अपने घर जाकर अपने भतीजे से क्या कहना है। जब वह व्यक्ति घर पहुंचा तो अपने भतीजे की दयनीय हालत देख उसे रोना आ गया। फिर भी वह अपने भावनाओं पर काबू रखते हुए अपने भतीजे को समझाया कि मेरे गुरुदेव ने तुम्हारे लिए यह संदेश भेजा है कि तू प्रभु की इच्छा के समक्ष अपने आपको पूरी तरह समर्पित कर दे। और तेरे पास जो भी संपत्ति है, उसे शुभ कार्यों में लगाता रह। तुझे इस बात की चिंता करने की जरूरत नहीं कि तेरे पास कल क्या रहेगा। आज और अब इस वर्तमान क्षण में प्रारब्ध वश तुझे जो भी उपलब्ध है, उसी से अपना जीवन यापन कर और दूसरों की भलाई में भी अपना योगदान देता रह।

इस बात को हमेशा याद रख कि तुझे प्रारब्ध से अधिक या कम कुछ भी मिलने वाला नहीं है। और न ही समय के पहले किसी को कोई चीज हासिल हो सकती है। तेरे भाग्य में ब्रह्मा ने आजीवन एक बोरी चावल और एक भैंस लिख दी है। अतः तुझे इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि कल का काम कैसे चलेगा। भतीजे ने चाचा की बातों को स्वीकार करते हुए मन ही मन गुरुदेव को भी प्रणाम किया जिन्होंने उसके जैसे तुच्छ जीव के कल्याण का भी उपाय बतला दिया है।

इस प्रकार वह एक बोरी चावल और भैंस लगभग रोज ही किसी को दान दे दिया करता। गरीबों को खिलाने-पिलाने में लगा देता और प्रारब्ध वश ब्रह्मा को उसके दरवाजे पर एक भैंस और एक बोरी चावल हाजिर करनी पड़ती। इस प्रकार शुभ कर्मों में रत रहते हुए भतीजे की बुद्धि पर पड़ा माया मोह का आवरण छटने लगा और वह खुद भी गुरुदेव के आश्रम में पहुंचकर उनकी कृपा से अपना पारलौकिक जीवन सफल बनाने की युक्ति जानने में भी सफल हुआ।

उक्त कथा काल्पनिक है अथवा वास्तविक इसकी विवेचना में न जाकर यदि हम इस दृष्टांत का मथितार्थ निकालें तो यही बात स्पष्ट होती है कि गुरुदेव जीव मात्र के परम हितैषी होते हैं और वे जीवों के पूर्वकृत कर्मों के प्रतिकूल फलों को भी अनुकूल बनाने की युक्ति बता उसका हर प्रकार से कल्याण करते हैं। इस प्रकार गुरुदेव की कृपा से जो युक्ति मिली उसके आधार पर उस व्यक्ति ने अपने प्रारब्ध का ऐसा लाभ उठाया जैसा बिना गुरु कृपा के उठाया ही नहीं जा सकता था। गुरुदेव सच्चा ज्ञान देकर मनुष्य को आभ्यांतरिक साधना की ऐसी युक्ति प्रदान कर देते हैं कि वह किसी भी तरह के प्रारब्ध को अपने अनुकूल कर जीवन के परम लक्ष्य तक पहुंच सकता है। गुरु ज्ञान के आलोक में उसे यह अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि उसका कल्याण कैसे होगा।

मित्रो, यह मानव शरीर प्रभु की असीम कृपा से मिला हुआ है इसे व्यर्थ ही जाया मत करो। किस उद्देश्य के लिए तु हारा जन्म हुआ है उसे मत भूलो। यदि तुम सांसारिक भोग-विलास में फंसे रहोगे तो जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाने वाला पुरुषार्थ कब करोगे। इस देव-दुर्लभ मानव शरीर का सदुपयोग तभी होगा जब गुरु कृपा से प्राप्त ज्ञान के आलोक मेंभक्त मार्ग पर आगे बढ़ोगे। इसके लिए तु हे प्रभु भक्ति में अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। तभी जाकर तु हारा मानव जीवन सफल होगा।